



भटकती आत्मा



डबल सीक्रेट एजेंट 00½
राम-रहीम

मनोज
कॉमिक्स

भटकेली आत्मा

जन्म-रहीम

लेखक-सिमल घातजी

चित्रांकन-प्रियांका कौलिकी ठाई.

शहर की भीड़-भाड़ से बहुत दूर, उस बीराने में खड़े थे खण्डहर जैसे अब भी चीख-चीखकर कह रहे थे कि वहाँ किसी समय एक विशाल और आलीशान हवेली थी, जिसे शक्त के थपेड़ों ने इस अवस्था में पहुँचा दिया है। रात के समय वे खण्डहर और उसके आस-पास का माहौल बहुत ही भयानक लगने लगता है, जिसके कारण लोग-बाग भूले से भी वहाँ जाने का साहस नहीं करते थे।



हवेली के उन खण्डहरों से एक सड़क सीधी जाकर एक जोगादे से मिल गई थी और उसी जोगादे से एक सड़क बाईं ओर घूबकर सीधी शहर तक चली गई थी। दूसरी शहर से बाहर चली जाती थी और तीसरी एयरपोर्ट की ओर।



उस रात
नें बस
बापस
वत थी

लेकिन जैसे ही वह उस बीराहे पर पहुंचा, जंजन ने काम करना बन्द कर दिया।



सत्यानाश!
लगता है, पेट्रोल
खत्म हो गया!

10,000

अब क्या करे।
उनके अलावा उला इस बीराहे में

मूर्खाधिराज अकड़-भगड़
सपना • फ़िस्मत का घनी •
डर • घटकती आत्मा •
प्रतिशोध की उकता •
• लोने जब मर

बाप कैसे लें?

1. आपका उपराज मोहन चिन्मय, जो प्रथम पन्ना के टैट में प्रकाशित हो रही है, अपनी पत्नी अनुसार काम देना है।
2. मनोज चिन्मय के बारे में नीचे दिये गये बिन्दुओं में आठ शब्दों में पूरा कीजिए।
मनोज चिन्मय पढ़कर ऐसा लगता है...
अब अपना प्रवेश पत्र मनोज चिन्मय के कवर पर लिखें।
मनोज चिन्मय प्रतिभागिता...
अनुसूचित मार्ग, शक्ति नगर...

110 007

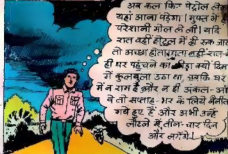
क्रम हमारे द्वारा निर्धारित रूप में मूल खपेगा
या शायद सर्वप्रथम द्वितीय व तृतीय माना जायेगा
प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय परस्पर दिया जायेगा।

प्रवेश-पत्र के साथ मनोज चिन्मय के कवर की
कॉपी भेजनी होगी।



सचमुच पेट्रोल ही खत्म
ध्यान ही नहीं रहा कि गाड़ी
रिजर्व में चल रही है और
पेट्रोल इलवाना है!

मजबूरी थी। मोटर साइकिल को वहीं छोड़ रही मैं पैदल
ही आगे बढ़ने लगा।



अब कल कि पेट्रोल खत्म
यहां आना पड़ेगा। मुफ्त में
परेशानी भोग ले ली। यदि
रात वहीं होटल में ही रुक जाऊं
तो अच्छा ही होगा। लड़ी-रणाई
ही घर पहुंचने का... कितनी कष्ट
में कुलबुला उठा था, सब कि घर
में न रात है और न ही अंकल-आं
ने तो सप्ताह भर के लिये भीतर
गये हुए हैं और अभी उन्हें
लौटने में तीन-चार दिन
और लगेंगे।

आरम्भ

कमबख्त
अभी ही
धुपने
तस
दिखाई

लेकिन दौड़ लगाते हुए रही मैं अभी कुछ ही
फासला लग गया होगा कि एक जवाननी बीराह
ने उसे नुकील तरह चौंका दिया।



बचाओ...!

अरे

6

मनोज

सदस्यों

प्रतिभागिता

7

पन्ना म

ओह! उस लड़की की जान खतरे में है! कार सवार शायद उसे कुचलने का इरादा रखता है!



और इससे पहले कि कार खुलती की कुचल पाए।



मेरे प्रेम की क्या गल, लेकिन जैसे ही कार खतरा नोट करने के लिये रुकी मैंने पलटकर की ओर देखा, कार इतने दूर तक नहीं पल

आश्चर्य है!
इतनी जल्दी वह कार कहाँ गायब हो गई?



आप कौन हैं, इतनी रात इसी यहाँ इस वीराने में क्या कर रही हैं, कहाँ रहती हैं आप और वह बंदूकवाली कौन थी और आपको क्यों मारना चाहता था?



मिने कीई उत्तर नहीं दिया। मेरे अग्रणी-सूत्री आँखों से यहीम को घूरती रही, जैसे वह उसे का प्रयत्न कर रही हो।

वह खड़े-डुकुर-डुकुर मेरी ओर क्या देख रही हैं? आप नीलती क्यों नहीं, कौन हैं आप और कहाँ रहती हैं?

तुम... तुम कुन्दन ही हो न? मेरे छोटे भाई



कुन्दन! छोटा भाई!



आपको भूलतफझी हो रही है मैंम। मेरा नाम कुन्दन नहीं, बल्कि रहीम है और मेने आज मे पहले कभी आपको नहीं देखा।



एक रात... तुम मेरे भाई कुन्दन ही हो और मैं तुम्हारे ही पहा आने का एक राताब्दी से इन्तजार कर रही थी।

एक राताब्दी से! अरे बापरे! यह मैं फिर किस मुसीबत में कैसे गया। अजब यह लड़की वा तो पागल है या फिर मुझे बुरा नज़र की कोशिश कर रही है!

मुझे मेडम मुझे बुरा नज़र की क्या मत करो! उस से तुम मत कह-अरकाय 15 से अधिक की नहीं जानी, फिर एक राताब्दी मे अपने भाई का इन्तजार करने का मतलब है!

यह तुम नहीं समझ पाओगे भाइया! जैसे बिना कसो, मैं तो कुछ से कह रही हूँ, वह नहीं है!



बिल्कुल नहीं, मैं तुम्हारी बातों पर जरा भी विश्वास नहीं कर सकता। सच-सच बताओ, तुम कौन हो और यह सब क्या नाटक है?

मैं जानती थी। तुम मिलने पर ऐसा ही कहोगे, क्योंकि पिछले जन्म की तमाम बातें तुम भूल चुके हो, परन्तु मुझे आज भी सब कुछ याद है।



पिछला जन्म! क्या ककवास है? तुम मुझे फिर बुरा नज़र की लगने!

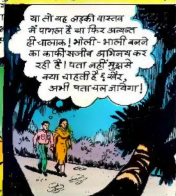
ऐसी को बात नहीं भ्रम है! घर फिर मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगी और याद दिलाऊँगी!



घर! कहाँ हैं तुम्हारा घर? और हाँ, तुम्हारा नाम तो मैंने पूछा ही नहीं!

मेरा नाम कामनी है और मैं पास ही एक हवेली में रहती हूँ। जाओ चलो!

कुछ सोचकर रहीम उसके साथ चल पड़ा।



या तो वह जड़की वास्तव में पागल है या फिर अत्यन्त ही चालाक! भौली-भौली बनने का काफी शजीब अभिनय कर रही है। पता नहीं मुझसे नया चाहती है? खैर, अभी पता चल जावेगा!

औघ्र ही-

मैं इसी हवेली में रहती हूँ।

हुम्म! तुम्हारे साथ और कौन-कौन रहता है यहाँ?



कोई नहीं, यहाँ मैं अकेली ही रहती हूँ। हाँ, एक वफादार नौकर और रहता है मेरे साथ।

ओह! इतनी बड़ी हवेली में अकेले रहना भी एक आश्चर्य की बात है, लेकिन तुम्हारे माता-पिता का क्या हुआ?



युवती ने, जिसने कि रहीम को अपना नाम कामली बताया था, कुछ कहने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि दूर किसी घड़ियाल का घण्टा बज उठा!

टन-टन-टन-टन

ओह! चार बज गये!

शौर अचानक ही कामली अत्यन्त ही व्याकुल दिखाई देने लगी।



क्यों, क्या हुआ? यह तुम अचानक ही परेशान क्यों हो गईं?

बस भैया, अब मैं तुम्हारे साथ और ज्यादा देर नहीं रह सकती। यदि अपनी बहन का दुःख-दर्द जानना चाहती हूँ तो कल रात बारह बजे आना। अब मैं जा रही हूँ।



ऐ-ऐ रुको!

माजी वह भुनिया हवेली हैं! लेकिन वह लफ्फी इ क्या वह भी कोई भुजानी थी, जो वास्तव में ही एक शाताब्दी से अपने भाई कुन्दन का इन्तजार कर रही है! लेकिन नहीं, मैं भूल-बेलों के अस्तित्व पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता!



नोरद माइकिल में पेट्रोल भरने के पश्चात् उस पर सवार होकर रहीम सर्वप्रथम जमी हवेली के पास पहुँचा।

आश्चर्य है, यह तो कोई पुराना खण्डहर है, जगह कल रात यह हवेली यही शाताब्दी में थी! भीतर प्रकरा भी हो रहा था!



तभी उसकी दृष्टि पास ही खड़े किसी कोछा के मुत पर पड़ी।

अरे! कल रात जिस व्यक्ति ने मुझे भीतर जाने से रोका था, उसकी शक्ल तो वस्तु मुत से काफी हद तक मिलती-जुलती है, लेकिन वह कहाँ गया, अब भी दिखाई नहीं दे!



आश्चर्य में हुआ रहीम कुछ सोचकर हवेली के भीतर प्रविष्ट हुआ।

जि:सन्देह, वहाँ की अवस्था को देखकर तो यही लगता है कि एक शाताब्दी से वहाँ कोई नहीं रहता होगा!



रहीम ने हवेली का वस्त्र-वर्ण छान भाग—



कमाल है! कोई भी नहीं है यहाँ पर! तो क्या स्कूटर इन्तजार का कहना यही है कि वह हवेली भुनिया है और कल रात किसी वह भुजानी वास्तव में कोई भलकती हुई कह ही थी!



स्वबख्शदार! तुम भीतर नहीं जा सकते। भलाई इसी में है कि वापस लौट जाओ।

ओह! क... कौन हो तुम?



प्रश्न नहीं! चुपचाप वापस लौट जाओ, वरना मुबह लोगों को तुम्हारी सिर कटी लाश ही यहां मिलेगी।

इस समय इससे उलझना बेकार ही होगा। मुबह देखेंगा!



ठीक है भाई, तलवार गर्दन से हटाओ। मैं वापस लौट जाता हूं।

समझदार हो!



योद्धा ने तलवार रहीम की गर्दन से हटा ली और वह चुपचाप वहां से लौट पड़ा।

शायद वह योद्धा टाईप नौजवान, कामनी का ही कथित बफादार लौकर होगा। खैर, मुबह समझेंगा उसने भी!



इसने दिल मुबह रहीम ने एक पेट्रोल पम्प में एक डिब्बे में पेट्रोल लिया और एक धी-धीलर में बैठकर उसी मोर्चे पर पहुंचा, जहां उसने मोटर साइकिल छोड़ी थी।

लो भाई, यह किराना संभालो!

ठीक है सहब। पर बात कहना चाहता। आप यहां अधिक देर न रुकें।



क्यों?



वह जो अण्डहरनुमा हवेली दिखाई दे रही है ला साहब, उसी के कारण। लोगों का कहना है कि वहां भूतों का वास है!

ओह!



कल रात की घटना को छुपाते हुए रहीम बोल

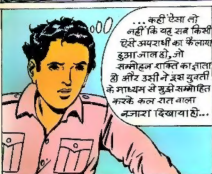
ठीक है, मैं अभी मोटर साइकिल में पेट्रोल डालते ही यहां से चल दूंगा।

अच्छा साहब अब मैं चलता हूं।

फिर ना-ना प्रकार के विचारों में डूबा रही। मोटर साइकिल पर सवार हो वापस लौट पड़ा।



यदि भूल-प्रेतों का कोई अस्तित्व नहीं तो फिर यह सब क्या चक्कर हो सकता है। अण्डहर हवेली बन जाए, मूर्ति इंसान में बदल जावे और एक सुवर्ती एक शताब्दी से उन अण्डहरों में बास कर रही हो...



... कहीं ऐसा तो नहीं कि यह सब किसी ऐसे अपराधी का कैलाश हुआ जाल हो, जो सम्मोहन शक्ति का दाता हो और उसी ने इस सुवर्ती के माध्यम से मुझे सम्मोहित करके कल रात वाला नजारा दिखाया हो...



... लेकिन प्रश्न फिर वह उत्पन्न होता है कि इस तरह मुझे सम्मोहित करके वह अपराधी चाहता क्या है? वह मुझे उस सुवर्ती का भाई कुन्दन क्यों बनाना चाहता है?

लेकिन रहीम के पास स्वयं अपने ही प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था। घर पहुंचकर उसने हल्का-सा भोजन किया, फिर आराम करने के लिए बिस्तर पर लेट गया। परन्तु न तो उसे नींद ही आई और न ही उसका किसी काम में ही दिल लगा। बस हवेली और उस सुवर्ती का चेहरा ही उसकी आंखों के सामने घूमता रहा और इसी तरह धीरे-धीरे शाम हो आई।



कौन ही सकती है वह सुवर्ती? उफ! वदे से दिमाग फटाजा रहा है। काश! राम भैया इस समय यहाँ होते।

अब काफी कोशिश करने के पश्चात् भी रहीम को दिमागी शान्ति नहीं मिली —



और वास्तव में पुनः बिस्तर पर लेटते ही उसे गहरी नींद ने धर दबोचा।



परन्तु मध्य रात्रि की जैसे ही दीवार पर लगी घड़ी ने अपने कर्करा स्वर में बारह बजने की सूचना दी, रहीम की नींद अचानक ही टूट गई और वह पहले के समान ही परेशान हो उठा।



लेकिन रहीम ने उठकर अभी बेज की दरज़ से बाँध की शोलियों वाली शीशी निकाली ही थी कि उसे ऐसा लगा, जैसे कोई उसके कानों में फुसफुसा रहा हो।



कमल ही पल —

मैं सोच रहा हूँ, देख रहा हूँ, लेकिन फिर भी पता नहीं कबों काफी कोशिश करने के बावजूद भी वहाँ जाने से अपने आपकी रोक नहीं पा रहा! ऐसा लग रहा है, जैसे कोई अदृश्य शक्ति मुझे जबरदस्ती हवेली की ओर खींचे लिये जा रही है।

कुछ ही देर बाद —

अरे, वह हवेली तो कल रात की तरह ही प्रकाशमान है और सही अवस्था में है! आखिर वह कैसा चमत्कार है ?



ओह! द्वार तो बन्द है, जबकि कल रात खुला था और वह मूर्ति भी गायब है, जिसे मैंने सुबह ही वहाँ खड़े देखा था।

तभी —

आ... ई... ई... ई...!





ठीक लम्बी हुंसेली के भीतर ही किसी का तेज स्वर आया।



दूसरे ही पल--









इस बैठक को देखकर क्या तुम्हें कुछ याद आया ?

नहीं, कुछ नहीं। सिवाय इसके कि मुझ मुझे यहाँ मकड़ियों के जालों और टूटी-फूटी दीवारों से निकल रही घास के कुछ भी दिखाई नहीं दिया था।



ही... ही... ही... * बीते वक्त की तस्वीरें सबरे नहीं, बल्कि रात में ही अच्छी तरह दिखाई देती हैं भइया। दिन के समय तो यहाँ सभी को वही दिखाई देगा, जो तुम देख चुके हो।

तुम्हारी उल्टी-सीधी कोई भी बात मेरे पल्ले नहीं पड़ रही। साफ-साफ बताओ कि साजरा क्या है, वरना...



तुम मेरे हाथों नहीं बचोगी। इस रिवाल्वर में पुरा छः गोलियाँ हैं।

ना-ना मेरे अच्छे भइया! इस खिलौने को जेब में ही रखो। अगर मेरी इच्छा के यह भी यहाँ आवाज नहीं कर सकता। विश्वास न हो तो बलकर देख सकते हो।



तुम मुझे नहीं मानने वाली। लो, मैं तुम्हारा किस्सा ही खत्म किये देता हूँ।

ही... ही... ही...!

पिट - पिट - पिट -





क्या तुम अपने माता-पिता को भी नहीं पहचानते। जरा इन तस्वीरों को गौर से देखो।

नहीं-नहीं-नहीं- मैं कह चुका हूँ कि मैं किसी को नहीं पहचानता।

ओह! मेरी लगाम कोशिशें बेकार रही। अब मुझे अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये कोई और ही उपाय करना होगा।



क्या सोच रही हो तुम? जल्दी से मुझे उस हवेली से बाहर निकालो। जब मैं यहाँ एक सेकण्ड भी नहीं रह सकता, मेरा दम घुट जायेगा यहाँ।

ठीक है, आओ मेरे साथ।

कामनी रहीम को न जाने किन-किन गुप्त मार्गों से लेकर आगे बढ़ती रही।

अखिर यह तुम मुझे कहाँ लिये जा रही हो?

अभी मालूम हो जायेगा। चलते रहो।

रहीम ने लाख चेष्टा की कि वह कामनी के पीछे न जाये, लेकिन वह अपने कदमों पर अंकुश नहीं लगा पाया। इस समय उसकी अवस्था ऐसी हो थी, जैसे कोई जड़स्थ शक्ति जबरदस्ती उसे आगे की ओर धकेल रही हो।

कमरे के एक स्थान पर पहुँचकर कामजी ने
लगातार लगे एक बटन को दबाया।



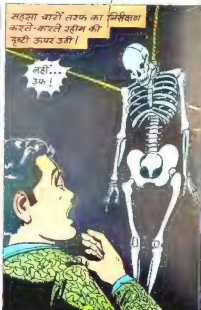
मेरे पीछे चले
आओ भइया!



मिट्टियों के समाप्त होने पर —



सहसा चारों तरफ का निरीक्षण
करते-करते रहीम की
दृष्टी ऊपर उठी।







अगले ही पल रहीम चकराकर फर्श पर गिरा और बेहोशी के गहरे सागर में डूब गया।

मुझे दुख है भइया कि इतने वर्षों के बाद मिलने पर भी मुझे तुम्हारे साथ यह व्यवहार करना पड़ा, लेकिन तुम्हें भूलकाल में पहुंचाने के लिये मैं ऐसा करने पर मजबूर हो गई थी।



और जब वूर किसी थॉडियाल ने रात के दो बजाए तो हवेली का विशाल फाटक खुला और उसमें से एक दरम्याने कद का थ्रयानक ईसान बाहर निकला...



... और तेजी से शहर की ओर दौड़ पड़ा।



वह ईसान और कोई नहीं, कामलो का भाई कुन्दन ही था।

लगभग आधा घण्टे बाद वह शहर की एक शानदार कोठी के सामने खड़ा था।



एक बार उसने कोठी की चारदीवारी और आस-पास का निरीक्षण किया और फिर—

चारदीवारी ऊंची जरूर है, लेकिन मेरे लिये नहीं।



कमरे ही पल बह कोड़ी की चारदीवारी लपककर लौट लौट में था।

चारों तरफ सन्नाटा है। केवल इसी कमरे में प्रकाश है और यहीं से कुछ लोगों के बातचीत करने की आवाज आ रही है। शायद वह सैलान रामलाल इसी कमरे में कुछ लोगों के साथ मौजूद है। मुझे अन्य लोगों के उसके पास से हट जाने तक इन्तजार करना होगा।

उसी प्रकारमान कमरे के भीतर —

वाह भाई रामलाल! तुम नकई दिलदार हो। नुमहारी दावत का भी कोई जवाब नहीं। मजा आ गया।

मजा क्यों नहीं आयेगा भाई। कल रात ही इन्हें अपने जुआ घर से लाखों का फायदा हुआ है।



भाई, हम तो भगवान से वही प्रार्थना करते हैं कि वह इन्हें छप्पर फाड़कर इसी तरह देता रहे और हम पर इनकी कृपा-वृष्टि हमेशा ऐसी ही बनी रहे।

अरे भाइयो, मुझे भगवान की नहीं, बल्कि आप लोगों की कृपा-वृष्टि चाहिये। यदि आप लोगों की कृपा रही तो एक दिन लक्ष्मी भगवान के कदम चुमेगी।

हा... हा... हा... वाह भाई, यह भी खूब कही।



कुछ देर बाद —

अच्छा भाई रामलाल! रात काफी हो गयी है। अब हमें आइया रो।

हाँ भाई, वरना रास्ते में भौंकेने वाले बहुत मिल आयेगे।

अच्छा साथियो, कल की शुभ शानि मगाने के लिये आज गुड नाईट।

हा... हा... हा...!



मेहमान जा रहे हैं।
बस कुछ क्षण और इंतजार
करना है। उसके बाद मेरा यह
गँडासा होगा और उस
शैतान रामलाल की बदल।



रात काफी बीत चुकी
है। अब मुझे भी सो जाना
चाहिये। सुबह-सुबह ही मुझे
बंदरगाह पहुँचना है। यदि
मेरे माल वाला जहाज
सही-सलामत तट पर
पहुँच गया तो मेरे लाखों-करोड़ों
के खर्चे-ब्यादे ही जायेंगे।



तभी-

अरे, यह
अचानक बिजली
कैसे गुल हो गई!



उसी समय भड़क से खिड़की खुली और वहाँ एक भयानक
वेहरा देखकर सैठ रामलाल की चिन्मी बंध गयी।

भड़, भड़क

अरे बापरे,
भ... भूल!



हा... हा... हा...
अब तुम नहीं बचोगे
मेरी सिर्फ उर्फ सेठ रामलाल!
क्यों तुम्हें अपने पुराने पापों
के सजा मिलने के साथ साथ
मेरी बहल की आत्मा की भी
हड़्डी-सी शान्ति मिल जायेगी।
कर लो अपने सैलान की याद!

क...
कीन
हो तुम!

सुखारी
मौत!

आ... ई... ई...

गर्दन पर बार होने के साथ ही रामलाल की
हृदयविदारक पीछ वातावरण में भूज गई।

तेरह में से एक कुत्ता
अपने किये की सजा पा गया।
अब निकल चलूँ और दूसरे
शिकार की देखूँ।

तभी रामलाल की भयावनी पीछ सुनकर उसकी
यस्त्री, बच्चे और नौकर-चाकर आदि वहाँ पहुँचे।

स्वामी! न...हीं...हीं...

पर जैसे ही उनकी नज़र कुन्दन पर पड़ी-

बह रहा
हल्लास! यकरो!

कुछ मौकों ने दोड़कर कुन्दन को पकड़ना चाहा, लेकिन जैसे ही उन्होंने उसकी भयानक सूरत देखी—



बदहवास हो लीकरीं ने तुरन्त उसका मार्ग धीरे दिया।



सेठ रामलाल बाहर की मशहूर हस्ती थी, जतः पुलिस दल को उनकी कोठी में खुदने में ज्यादा देर नहीं लगी।



उसके बाहर जाने के बाद —

हे, नाथ, आप
जरा के विभिन्न कोनों
के मोटी थापस लीजिए।
नाथ की हमारे द्वारा
जुड़े गये निशानों के
मोटी लैने की सीसिया
कीजिये...

... उस खुली हुई खिड़की
से विशेषकर मुझे विश्वास
है हमारा उसी खिड़की से
कमरे के भीतर दाखिल
हुआ होगा।

बेहतर
है
इंस्पेक्टर!

और हवलदार
रामसिंह, तुम नौकरों
और सेठजी के परिवार
जालों से बचान लेंकर
मयरलेस द्वारा क्यारि का
दुनिया कन्ट्रोलरूम की
पेस कर दो, ताकि तुरन्त
ही चारों ओर उसकी खोजबीन
आरम्भ हो जाए।

बस
सर!

इधर पुलिस बल अपनी कार्यवाही करने में लग चुका
था और उधर भयानक कुब्ज से रामलाल की कोठी
से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर उत्तर में
स्थित एक आलीशान बंगले के सामने खड़ा अपने
दूसरे शिकार की गंध सूंघ रहा था।

मि. जयचन्द आसीछमवी.

बिल्कुल ठीक। यही है मेरा
दूसरा शिकार! देश का
पुराना गद्गदार आज देशभक्त नेता
बना रहा है। आज इसकी सारी देश-
भक्ति मेरे मंडाने के एक ही बार से
झूल की नहीं मैं झुकर हनेशा-हनेरा
के लिये दम तोड़ देगी। हा... हा... हा... हा!

जल्दी ही पल गढ़ पिछवाड़े की दीवार फाँटकर भीतर पहुँच गया।

शीदी ने बताया
था कि यह शैलाल
अपने बंगले में बिल्कुल
अकेला रहता है। जल-रसमे
नेपटले में ज्यादा मुश्किल
पेरा नहीं आवेगी।

भितर के भीतर प्रविष्ट हो कई कमरों को देखने और एक-दो महिलाओं की पार कराने के पश्चात् कुन्वन एक कमरे के आगने आकर रुक गया। भीतर प्रकाश था और किसी के बालपील करने का स्वर भी आ रहा था।



आनाजों से तो मालूम होता है कि भीतर केवल बी ही प्राणी हैं, जिसमें एक स्त्री है और दूसरा पुरुष। लेकिन मुझे यहाँ केवल एक ही पुरुष अवचान्य आर्य से मतलब है। की-होल से देखूँ!

कुन्वन ने की-होल से भीतर झाँका।



भीतर वास्तव में अवचान्य आर्य एक युवती के साथ मौजूद था।



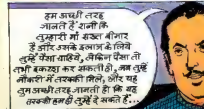
तुम बहुत खूबसूरत हो रानी! आओ-आओ, हमारे करीब आओ। हम तुम्हारे सारे दुःख-दर्द दूर कर देंगे।

नहीं-नहीं, रात काफी हो चुकी है। अब मैं जाती हूँ।



रात बीती जरूर है रानी, लेकिन अभी रात नहीं हुई है।

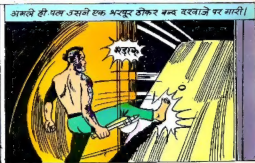
मेरी हालत पर लरस खाइये बाबूजी और मुझे जाने दीजिये। मैं सख्त बीमार हूँ। दरवाजा खोल दीजिये प्लीज!

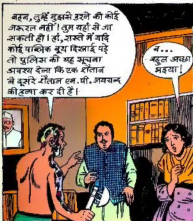


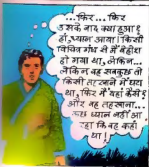
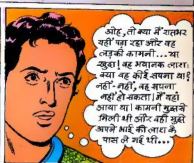
हम अच्छी तरह जानते हैं रानी कि तुम्हारी माँ सख्त बीमार हैं और उनके इलाज के लिये तुम्हें पैसा चाहिए, लेकिन पैसा तो तभी इकट्ठा कर सकती हो, जब तुम्हें नौकरी में तयकती मिले, और यह तुम अच्छी तरह जानती हो कि यह तयकती हम ही तुम्हें दे सकते हैं...



... इसीलिये तुम्हारी मजदूरी को देखते हुए हमने आज रात तुम्हें यहाँ बुलावा था। वस, तुम हमें थोड़ा-सा धुंसा कर दो।







इधर भोर हीमे के साथ ही एक रात में एक हत्यारे द्वारा किये गये दो बड़े आक्रमणों की हत्या के समाचार से पूरे शहर में सनसनी फैल चुकी थी।

आज की ताजा खबर, एक वहरी इंसान द्वारा एक ही रात में दो लोकप्रिय व्यक्तियों की हत्या। आज की ताजा...

लगता है, शहर में फिर कोई भयानक मुसीबत आने वाली है!

हां भाई, बरना उन देवता स्वरूप जयचन्द और सेठ रामलाल की कोई भला क्यों हत्या करने लगा। वे तो बहुत बड़े समाज सेवी थे।

ठवेली से घर पहुँचकर जब सुबह का समाचार-पत्र रहीम ने पढ़ा—

कल रात ही दो खून हो गये हत्या करने वाला एक भयानक शक्ति-सूरत का लड़का था। उफ! अखबार में उसका हुलिया दिया हुआ है। यह तो कामनी के जले हुए मेरे भाई कुन्दन यानी मेरी शक्ति से मिलता-जुलता है...

...क्या यह खून वही कर रहा है। नहीं- नहीं, उसे तो मैं ठवेली के तहखाने में प्राण विहीन देख चुका हूँ। ताबूत में उसकी लाश ही पड़ी थी, फिर कामनी ने भी तो यही कहा था... तो फिर ?

तभी एक विचार बिजली के समान उसके मस्तिष्क में कौंधा —

कहीं यह खून उसने मुझे सम्मोहित करके मेरी अज्ञानता में मुझी से ही तो नहीं कराये दिया अल्लाह! यदि उसने ऐसा ही किया होगा तो गजब हो जायेगा। मैं किसी को मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहूँगा...

और रहीम फूट-फूटकर रो पड़ा।

- क्या राम की वापसी हुई ?
- कामनी और उसके भाई कुन्दन का क्या रहस्य था ? वह बार-बार रहीम की ही अपना भाई कुन्दन क्यों कह रही थी ?
- सेठ रामलाल और जयचन्द का खून क्या वास्तव में रहीम ने ही किया था या कुन्दन ने ?
- कामनी रेश के नामी-बामी आक्रमणों की हत्या क्यों करा रही थी ?
- क्या कामनी वास्तव में ही एक भटकती हुई रूढ़िवादी थी फिर उसका फैलाया हुआ कोई भयानक जाल ?
- कामनी कई शताब्दियों की बात क्यों करती थी ?
- उसके पिछले जन्म का क्या रहस्य था ?
- क्या भयानक कुन्दन पुलिस सुपरिटेण्डेंट का खून कर सका ?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जाने के लिये मनोज चित्रकथा के आगामी अंक में पढ़ें—

आत्मा का प्रतिशोध